कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका
खण्ड 05 भाग 10, (मार्च, 2026)
पृष्ठ संख्या 16–17

मखाना की व्यावसायिक खेती, व्यावसायिक एवं औषधीय उपयोगिता

डॉ. मुनेश्वर प्रसाद मंडल
सहायक प्राध्यापक–सह–कनीय वैज्ञानिक,
पादप कार्यकी एवं जीव रसायन विभाग,
भोला पासवान शास्त्री कृषि महाविद्यालय,
पूर्णिया, बिहार, भारत।

Email Id: – mpmbotany64@gmail.com

मखाना एक महत्वपूर्ण जलीय फसल है, जिसे भारत में विशेष रूप से बिहार राज्य में बड़े पैमाने पर व्यावसायिक रूप से उगाया जाता है। यह फसल न केवल पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि किसानों के लिए आय का एक स्थायी और लाभकारी स्रोत भी है। बदलती जीवनशैली और स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण मखाना की मांग देश और विदेश दोनों बाजारों में तेजी से बढ़ रही है। मखाना को अंग्रेजी में "Fox nut" या "Gorgon nut" कहा जाता है और यह एक प्रकार का जल में उगने वाला पौधा है, जिसकी खेती तालाब, चौर, पोखर और उथले जलाशयों में की जाती है। मखाना की खेती पर्यावरण के अनुकूल होती है और इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता होती है, जिससे इसकी खेती टिकाऊ और लाभदायक मानी जाती है।

मखाना की व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त जल और भूमि का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसकी खेती के लिए 1 से 1.5 मीटर गहराई वाले स्थिर जल वाले तालाब या चौर उपयुक्त होते हैं। पानी साफ, प्रदूषण रहित और जैविक पदार्थों से भरपूर होना चाहिए। मिट्टी चिकनी या दोमट होनी चाहिए, जिससे जल धारण क्षमता अच्छी बनी रहे। मखाना की खेती के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना भी आवश्यक है, जैसे स्वर्ण वैदेही, शक्तिमान और साभा वैदेही, जो अधिक उत्पादन और बेहतर गुणवत्ता प्रदान करती हैं। बीजों को पहले नर्सरी में अंकुरित किया जाता है और उसके बाद मुख्य जलाशय में रोपाई की जाती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 20–25 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। उचित दूरी पर पौधों की रोपाई करने से पौधों का विकास अच्छा होता है और उत्पादन में वृद्धि होती है।

मखाना की फसल के अच्छे उत्पादन के लिए पोषक तत्वों का उचित प्रबंधन आवश्यक होता है। तालाब की मिट्टी में गोबर की सड़ी खाद, वर्मी कम्पोस्ट तथा अन्य जैविक खादों का उपयोग करने से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है। रासायनिक उर्वरकों का सीमित और संतुलित उपयोग करना चाहिए। जल की गुणवत्ता बनाए रखना भी आवश्यक होता है, क्योंकि अत्यधिक प्रदूषित जल पौधों के विकास को प्रभावित कर सकता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए समय–समय पर सफाई आवश्यक होती है। मखाना की खेती में मछली पालन को भी शामिल किया जा सकता है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है और यह एकीकृत खेती प्रणाली का अच्छा उदाहरण है।

मखाना की फसल सामान्यतः 4 से 5 महीनों में तैयार हो जाती है। अगस्त से सितंबर के बीच इसके फल जल के अंदर पकते हैं। पारंपरिक रूप से गोताखोरों द्वारा जल में उतरकर फलों को एकत्र किया जाता है, जो एक कठिन और श्रमसाध्य कार्य है। फल एकत्र

E-ISSN: 2582-9769

करने के बाद बीजों को सुखाया जाता है और फिर विशेष भट्ठी में भूनकर उन्हें फुलाया जाता है। इस प्रक्रिया के बाद सफेद, गोल और हल्के मखाने प्राप्त होते हैं, जिन्हें बाजार में बेचा जाता है। आधुनिक तकनीकों के उपयोग से प्रसंस्करण की प्रक्रिया को अधिक कुशल और सुरक्षित बनाया जा सकता है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता और मूल्य में वृद्धि होती है।

मखाना की मार्केटिंग व्यावसायिक खेती का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वर्तमान समय में मखाना की मांग घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में तेजी से बढ़ रही है। भारत में मखाना का उपयोग व्रत, पूजा, मिठाई और स्नैक्स के रूप में व्यापक रूप से किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोग इसे एक हेल्दी स्नैक के रूप में अपना रहे हैं। मखाना को उचित ग्रेडिंग, पैकेजिंग और ब्रांडिंग के माध्यम से बेहतर कीमत पर बेचा जा सकता है। किसान अपने उत्पाद को स्थानीय बाजार, थोक बाजार, सहकारी समितियों और किसान उत्पादक संगठनों (FPO) के माध्यम से बेच सकते हैं। इसके अलावा, ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन मार्केटिंग के माध्यम से भी मखाना की बिक्री की जा सकती है, जिससे किसानों को सीधे उपभोक्ताओं से जुड़ने का अवसर मिलता है और उन्हें अधिक लाभ प्राप्त होता है।

मखाना का मूल्य संवर्धन (Value addition) करके भी किसानों की आय बढ़ाई जा सकती है। आज बाजार में मखाना से बने कई उत्पाद उपलब्ध हैं, जैसे भुना हुआ मखाना, मखाना नमकीन, मखाना लड्डू, मखाना खीर और मखाना पाउडर। इन उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। छोटे स्तर पर प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना करके किसान और उद्यमी अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। सरकार और कृषि संस्थानों द्वारा मखाना प्रसंस्करण और विपणन के लिए प्रशिक्षण और सहायता भी प्रदान की जा रही है, जिससे इस क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

मखाना अपनी औषधीय उपयोगिता के कारण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह लो फैट और कोलेस्ट्रॉल मुक्त होता है, जिससे यह हृदय रोगियों के लिए लाभकारी है। मखाना मधुमेह के रोगियों के लिए भी उपयोगी है, क्योंकि यह रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है। आयुर्वेद में मखाना को बलवर्धक और शरीर को ऊर्जा प्रदान करने वाला खाद्य पदार्थ माना गया है। यह गुर्दे के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है और शरीर की कमजोरी को दूर करने में सहायक होता है। मखाना का नियमित सेवन पाचन तंत्र को मजबूत करता है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

मखाना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी खेती, प्रसंस्करण और विपणन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। विशेष रूप से महिलाएं और युवा मखाना आधारित उद्यमों के माध्यम से आत्मनिर्भर बन सकते हैं। बिहार सहित अन्य राज्यों में मखाना की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। कृषि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित नई तकनीकों और उन्नत किस्मों के उपयोग से मखाना उत्पादन को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि मखाना की व्यावसायिक खेती, प्रभावी मार्केटिंग और इसकी औषधीय उपयोगिता इसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभकारी फसल बनाती है। यदि किसान वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर इसकी खेती करें और आधुनिक विपणन तकनीकों का उपयोग करें, तो वे अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं। मखाना न केवल पोषण और स्वास्थ्य का एक उत्कृष्ट स्रोत है, बल्कि यह किसानों की आर्थिक समृद्धि और ग्रामीण विकास का भी एक मजबूत आधार बन सकता है।